Sanjay (Host): नमस्कार दोस्तों, आज के एपिसोड का मुख्य विषय है स्पिरिचुअलिटी और जीवन का संतुलन। क्या केवल भौतिक सफलता ही जीवन की पूर्णता है? क्या उद्योग, धन और प्रतिष्ठा के बीच रहते हुए भी मनुष्य आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छू सकता है? क्या जीवन के उत्तरार्ध में आत्मिक खोज, सेवा और साधना के माध्यम से जीवन को एक नई दिशा दी जा सकती है। इन सभी गहन प्रश्नों पर चर्चा के लिए आज हमने लाइफ एक्सप्रेस में एक विशिष्ट अतिथि को आमंत्रित किया है। जिन्होंने उद्योग, समाज और अध्यात्म तीनों क्षेत्रों में अपने जीवन को एक आदर्श उदाहरण के रूप में स्थापित किया है। वे ना केवल एक सफल उद्योगपति रहे हैं बल्कि एक साधक, लेखक, विचारक और आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक भी हैं। लेकिन उन सभी चर्चाओं से पहले मैं आज के विशेष अतिथि जो किसी परिचय या पहचान के मोहताज नहीं है उनका एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना चाहूंगा। (0:21-1:24)

हमारे आज के विशेष अतिथि हैं श्री अनिल कुमार चावला जी। अनिल कुमार चावला जी का जन्म 26 मई 1957 को पंजाब के किशनपुरा कला में एक सामान्य परिवार में हुआ। उनके परिवार 1947 के विभाजन के दौरान पाकिस्तान की ओर से भारत आए थे। वह भी बिल्कुल निर्धन अवस्था में। अनिल कुमार चावला जी ने अपने पिता की शैक्षणिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 1978 में पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज चंडीगढ़ से इंजीनियरिंग पूरी की। पिता की दूरदर्शिता और सहयोग से उन्होंने मात्र 1979 में एसएएस नगर मोहाली पंजाब में अपनी पहली औद्योगिक इकाई की स्थापना की। केवल छ महीनों के भीतर उनके पिता ने उन्हें पूरी जिम्मेदारी सौंप दी ताकि वे स्वयं सीखें, संभाले और उद्योग को आगे बढ़ाएं। इसके बाद वर्ष 1986 में उन्होंने बद्दी हिमाचल प्रदेश में अपनी दूसरी औद्योगिक इकाई स्थापित की। आज यह दोनों इकाइयां अत्यंत सफल और विशाल स्वरूप ले चुकी है तथा स्वराज Mahindra और Sonalika ग्रुप जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड्स के लिए ट्रैक्टर पार्ट्स के प्रमुख सप्लायर हैं। और पूरे क्षेत्र में अनिल जी एक सम्मानित और विश्वसनीय व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते रहे हैं। (1:27-2:59)

लेकिन मित्रों अनिल जी की यात्रा केवल उद्योग तक सीमित नहीं रही। उनकी जन्मजात आध्यात्मिक प्रवृत्ति ने उन्हें जीवन की एक और गहरी दिशा की ओर प्रेरित किया। वर्ष 2006 में उन्होंने अपने सफल उद्योगों की जिम्मेदारी अपने विश्वसनीय सहयोगियों को सौंप दी और उड़ीसा जाकर ठाकुर श्री श्री केशव चंद्र जी के सानिध्य में एक नए आध्यात्मिक जीवन का आरंभ किया। वे 2015 तक ठाकुर जी के अत्यंत निकट संपर्क में रहे। जब ठाकुर जी ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। ठाकुर जी द्वारा प्रारंभ की गई साधनाओं का निष्ठा पूर्वक पालन करते हुए अनिल जी ने ठाकुर जी की कृपा से चरम ग्रंथ का बार-बार अध्ययन किया और चरम से प्रेरित लगभग 15 पुस्तकें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी व अनुवादित की। जिनमें ठाकुर जी की जीवनी भी सम्मिलित है। यह सभी पुस्तकें आज विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर विश्व भर में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त उनके लगभग 200 से ज्यादा आध्यात्मिक वीडियो उनके YouTube चैनल ओम एडवiers.in पर भी उपलब्ध हैं। अपनी आध्यात्मिक यात्रा के दौरान उन्होंने वैदिक ज्योतिष में भी गहन अध्ययन किया और इंडियन काउंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजिकल साइंस आईसीएएस से दो वर्षों का प्रमाणित कोर्स पूर्ण किया। ऐसे कई खूबियां अनिल जी के व्यक्तित्व से जुड़ी हुई है। जिन्हें जानने के लिए नाउ आई शल टेक यू स्ट्रेट टू हिम। सो प्लीज ज्वाइन मी इन वेलकमिंग एन आइकनिक स्पिरिचुअल गुरु आदरणीय श्री अनिल कुमार चावला जी। नमस्कार सर। (3:02-5:03)

Dr. Anil K. Chawla: नमस्कार। सबसे पहले लाइफ एक्सप्रेस के सभी व्यूअर्स को मेरा हृदय से नमस्कार और अभिंदन। मैं संजय जी का बहुत आभारी हूं जिन्होंने आज मेरे को यह मौका दिया आप लोगों के सम्मुख होने का और अपनी जीवन के साथ जुड़ी कुछ घटनाओं को शेयर करने का और उसी के बारे में मैं अब आगे आपसे चर्चा करूंगा। (5:04-5:26)

Sanjay (Host): सबसे पहले लाइफ एक्सप्रेस की पूरी टीम की ओर से और अपने सभी बौद्धिक दर्शकों की ओर से मैं अत्यंत हर्ष और कृतज्ञता के साथ आपका लाइफ एक्सप्रेस में हार्दिक स्वागत करता हूं। सर आपके प्रोफाइल को देखने पर पता चलता है कि आपने पीक इंडस्ट्रियल सक्सेस पर पहुंचने के बाद आपने अपने सक्सेसफुल बिजनेस से स्टेप बैक किया। हम ऐसे में ना सिर्फ मैं बल्कि हमारे सभी इंटेलेक्चुअल व्यूअर्स आपसे जानना चाहेंगे कि क्या यह डिसीजन इनर कॉलिंग था या डिसइल्यूजनमेंट? (5:27-6:13)

Dr. Anil K. Chawla: हां, मैंने इंडस्ट्री चलाई। एक नहीं दो इंडस्ट्री लगाई थी। 1979 से लेके 2006 तक मैं एक्टिवली इन्वॉल्वड रहा दो इंडस्ट्रीज में एज ए फर्स्ट जनरेशन एंटरप्रेन्योर और वो आज भी सक्सेसफुली चल रही हैं। बाकी जो आपने सवाल जैसे पूछा है दिस वाज़ आज मैं यहां तक आने के बाद मैं कहूंगा वो मेरी इनर कॉलिंग थी। बिकॉज़ उस समय क्या हो रहा होता है कि आपका मन नहीं लग रहा होता। आप काम वही करेंगे जिसमें आपका मन लग रहा होता है। इंडस्ट्री में शुरू में मेरा मन तो लग रहा था बट प्रोडक्ट्स बनानी, नई-नई प्रोडक्ट्स बनानी, नई मशीनरी लेके आनी, नए लोगों से इंटरेक्ट करना वो सब चल रहा था। बट देन एट ए टाइम लेट्स से मैंने 2006 में छोड़ा तो उससे 8 9 साल पहले मेरा वहां से मन उखड़ना शुरू हो गया। अच्छा नहीं लगता था। कुछ नया चीजें जानना चाहता था। कुछ और जानना चाहता था। तो वो उस तरह करके चलता रहा। काम की तरफ से धीरे-धीरे मन उठा। उठा मतलब उसमें यह नहीं कि मैंने इंडस्ट्री की तरफ तवज्जो नहीं दी। इंडस्ट्रीज बहुत ऊपर गई। उसी दौरान इंडस्ट्रीज छोटी नहीं रही। बहुत बड़ी इंडस्ट्रीज बन गई थी। तो वो ऊपर गई। बट मेरा धीरे-धीरे पहले मैनेजमेंट किताबों की तरफ झुकाव गया। फिर सीखने की तरफ झुकाव गया। बट बीच में से जैसे खालीपन सा होता है। ऐसा महसूस होता था कि पैसे आ रहे हैं। फाइव स्टार्स में जा रहे हैं। चार-चार गाड़ियां रखी हुई हैं। फॉरेन ट्रिप्स चल रहे हैं। बट बेचैनी थी। शांत नहीं था। (6:14-7:48)

तो जब ये सिचुएशन चल रही थी तो उस समय धीरे-धीरे पहले बुक्स पे मैं आया और उसके बाद में बुक्स के बाद फिर मैंने स्पिरिचुअलिटी की तरफ आ गया। तो वहां पे जाके थोड़ा सा ठहराव अच्छा लगना शुरू हुआ। लगना शुरू हुआ कि ये चीज तो हां ये बिल्कुल ठीक है। ये बिल्कुल ठीक है। चाहे मैंने शास्त्र पढ़ने शुरू किए तो एंड में आके मैं कहूंगा जब मैंने एस्ट्रोलॉजी वगैरह कर ली गुरु जी के सानिध्य में रहा तब जाके मेरे को यह समझ आई कि ये आपकी इनर कॉलिंग ही थी और ये आपके प्रारब्ध का हिस्सा होता है। प्रारब्ध और संचित का जो कि हम टर्म सुनते हैं एस्ट्रोलॉजी में या इन चीजों में टर्म सुनते हैं। तो ये फैक्ट्स हैं। उसके बिना हम अपने आप से नहीं आते। तो उस वजह से मेरा झुकाव इस तरफ बढ़ता चला गया। और फिर फाइनली 2006 में आई टूक द कॉल और 2006 में ही आज से ऑलमोस्ट 20 साल पहले मैंने जो पीक पे यूनिट्स थे वो ग्रुप इंडस्ट्रीज को बेच दिए और उसी साल मैं उसके बाद अपने गुरु जी ठाकुर केशव चंद्र जी के पास उड़ीसा में पहुंच गया। उससे पहले मैंने बहुत आश्रम वगैरह भी देखे थे। सब कुछ पढ़ाइयां भी कर ली थी। विवेकानंद क्या ओशो क्या रविशंकर को क्या वेदता लाइफ इंस्टट्यूट क्या इन सब की तरफ मैं देख आया था करीब से देख आया था वर्ल्ड वाइड भी घूम आया था तो बट उसके बाद ठहराव जाके हुआ फाइनली ठाकुर जी के पास। (7:49-9:23)

Sanjay (Host): बहुत अच्छा वर्णन कर रहे हैं सर लेकिन यहां मेरा एक इंटरमीडिएट प्रश्न है कि आपने मटेरियल प्रोस्पेरिटी और स्पिरिचुअलिटी डिटचमेंट दोनों को जिया है। क्या सच में दोनों साथ-साथ पॉसिबल है या यह सिर्फ थ्यरी में ही अच्छा लगता है? इज मटेरियल सक्सेस इनफ फॉर इनर फुलफिलमेंट? (9:26-9:53)

Dr. Anil K. Chawla: नो। वन लाइन आंसर नो। बिकॉज़ अगर मटेरियल सक्सेस फुलफिलमेंट कर देती तो लोग अशांत ना रहते। लोग जितने भी ऊपर चले जाते हैं, वह उतना ही धीरे-धीरे स्पिरिचुअलिटी की तरफ, इंटरनल खालीपन की तरफ चले जाते हैं। हम यह देखते हैं कि हमें साथ-साथ अशांति रहती है। रातों को

नींद नहीं आती, होड़ लगी हुई है और हम उसमें जब सिर्फ मटेरियलिस्ट की तरफ रहते हैं तो हम स्वार्थ पर होते हैं। क्योंकि उसमें हम किसी के ऊपर राइड करेंगे। जैसे हम कहेंगे ना किल योर कंपटीिटर्स हम ऐसी सिचुएशन में आगे हुए होते हैं तो हम दूसरों को ऊपर राइड करके निकलते हैं जो कि धर्म के विरोध में है। जब तक हम सारे एकत्रित हो के आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते। अकेले तो हम आगे नहीं जा सकते। क्या हमें सारे साथ में नहीं चाहिए? बिल्कुल चाहिए। सो अकेला मटेरियलिस्टिक होना बिल्कुल ठीक नहीं है। साथ में जब तक अध्यात्म नहीं जुड़ेगा तब तक हम सक्सेसफुल नहीं अपने आप को मान सकते और अध्यात्म भी अकेला नहीं चलेगा। अध्यात्म के लिए भी आपको आगे बढ़ने के लिए कुछ तो अपना शरीर रक्षा के लिए पैसे चाहिए। तो दोनों का समन्वय चाहिए तो एक के साथ नहीं बात बनेगी सर। (9:54-11:15)

Sanjay (Host): हम सर अगले प्रश्न की ओर हम बढ़ेंगे और यहां हम आपसे जानना चाहेंगे कि चरम जैसे डीप स्पिरिचुअल टेक्स्ट को मॉडर्न माइंड के लिए रेलेवेंट बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसे में आप कैसे एनश्योर करते हैं कि स्पिरिचुअल टेक्स्ट लाइक चरम अह विल सर्व एस अ ट्रांसफॉर्मेशनल टूल टू हील टुडेस एलिंग ह्यूमन और मैनकाइंड। ओवर टू यू सर। (11:18-11:48)

Dr. Anil K. Chawla: संजय जी आपने बहुत सुंदर प्रश्न पूछा है क्योंकि चरम एक ऐसा शास्त्र है जो कि मैं कहूंगा जो सर्वश्रेष्ठ है। सर्वश्रेष्ठ मैं इसलिए कहूंगा कि यह नहीं है कि हमारे पास पहले शास्त्र नहीं है। हमारे पास भगवत गीता है। पुराण है और भगवत गीता आज की तारीख में सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है विश्व का। यह हम सभी जानते हैं। तो, मैं चरम को उससे भी चार कदम आगे इसलिए कह रहा हूं बिकॉज़ आज का जो युग है, यह साइंस का युग है। आज का जो युग है, बहुत ही जो आज की युवा पीढ़ी है, उनको हर सवाल के जवाब चाहिए। जो कि पहले इतना गहरा ज्ञान आज तक धरती पर था ही नहीं। अब जन्म के माध्यम से जो ज्ञान आया है हम जब उससे रूबरू होंगे तो हमें क्या उससे पता लगेगा कि भाई साहब सिर्फ जिंदगी जीने के लिए सिर्फ अपने को वैश्विक ज्ञान नहीं चाहिए वैश्विक ज्ञान तो सिर्फ शरीर की रक्षा के लिए है। घर संसार चलाने के लिए है। (11:49-12:52)

क्योंकि शरीर होगा तो हम अध्यात्म की तरफ अध्यात्म भी क्या है? अधि युक्त आत्मा। आत्मा जब इस अधि शरीर के साथ युक्त हुई हुई है यह अध्यात्म है। सो अपने आप को पढ़ना अपना स्वाध्याय करना अध्यात्म है। जब तक हम अपने अंदर को नहीं जानेंगे कि हमारा ये स्थूल शरीर है। ये खराब हो रहा है। हमारा इसके पीछे सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीर क्या है? सूक्ष्म शरीर में हमारा मनस आता है। हमारी बुद्धि आती है। हमारी इंद्रियां आती हैं। ये सारे हमारे सूक्ष्म शरीर का हिस्सा है। वो अगर अस्वस्थ है तो स्थूल शरीर कैसे स्वस्थ रहेगा? जैसे हम जानते हैं कि भगवत गीता में क्या हुआ था कि अर्जुन इतना पावरफुल वॉरियर था। और पहले ही चैप्टर में जो इतने लंबे श्लोक गए जब तक कृष्ण महाराज कुछ नहीं बोले थे। तो वो उसका पहला ही चैप्टर विषाद योग है जिसको अर्जुनस डिस्पोडेंसी कहते हैं। उसमें सब लॉजिकल बातें हैं कि ये धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, घर परिवार खराब हो जाएंगे, औरतें खराब हो जाएंगी, मेरे परिजन मर जाएंगे। वो सारा इस तरह का था। बट एंड में आके जब कृष्ण जी ने बोलना शुरू किया तो उसे क्या कहा? जब वो क्यों बोलना शुरू किया? उसने पहले अपने अस्त्र त्याग दिए। बिकॉज़ स्थूल शरीर उसका स्वस्थ था। मनस या सूक्ष्म शरीर उसका अस्वस्थ था। वो अस्वस्थ था। इसीलिए वह अस्वस्थ शरीर की वजह से स्थूल शरीर ने काम करना बंद कर दिया। एंड ही सेड कि मेरे से तो धनुष बाण भी नहीं उठाया जा रहा। वो बैठ गया। और शरणागति जब हुआ गुरु के तब गुरु ने ज्ञान देना शुरू किया। दैट इज व्हेन भगवत गीता फ्लोट। और उसके बाद सारे एक-एक करके योग दिए। तो वो अध्यात्म का ज्ञान था। वो उसके इंटरनल का ज्ञान था। वो उसका मोह भंग करने के लिए ज्ञान था। तो यह सारा जो ज्ञान है वो इसीलिए जरूरी है जब तक अध्यात्म नहीं होगा। यही तो आज की युवा पीढ़ी का यही हाल है। सब सिर्फ वैश्विक ज्ञान के पीछे, पैसों के

पीछे इन चीजों के पीछे भाग रहे हैं। बट अगर अध्यात्म नहीं जुड़ा हुआ इसीलिए सब अशांत हैं। उसका रोक नहीं है। उसमें हम पूरा जीवन जी ही नहीं सकते। सब पिल्स पे हैं, गोलियों पे हैं। सब को डॉक्टर चाहिए। अपने आप को शरीर को स्वस्थ करने के लिए बट मनस को स्वस्थ करने के लिए तो कुछ नहीं होगा। मनस के लिए सिर्फ अध्यात्म चाहिए और उसके लिए चरम को मैं इसलिए सर्वश्रेष्ठ कह रहा हूं कि अब जैसे मैं आपसे अभी चर्चा करूंगा कि इसमें किस-किस तरह के ज्ञान आए हुए हैं। (12:52-15:25)
इसमें हमारी सृष्टि की रचना कैसे हुई वो सारा सृष्टि तत्व है। इसमें हमारी हमारी रचना कैसे हुई मातृगर्भ में वो सारा ज्ञान है। वह दो पुस्तकों के माध्यम से अभी मैंने एक तो यह है मदर्स वूम करके मातृगर्भ में हम बनते कैसे हैं? (15:26-15:45)

Sanjay (Host): पुस्तक को और ऊपर उठाइएगा। कवर पेज को जी बहुत अच्छा बहुत अच्छा जी। (15:45-15:49)

Dr. Anil K. Chawla: तो ये हिंदी में भी है अंग्रेजी में भी है। ये ऑनलाइन अवेलेबल है। ये निकाली इसी चरम में से हैं। ये है चरम शास्त्र। (15:49-15:57)

Sanjay (Host): हम (15:57)

Dr. Anil K. Chawla: जो ठाकुर जी के माध्यम से आया है। अब इतना पतला सा है। इसमें 15 के करीब आर्टिकल आते थे एक चरम में। यह 1993 से आना शुरू हुआ और 2015 तक 22 सालों में इसके 50 क्रमांक आए हैं। उन 50 क्रमांकों में (15:58-16:15)

Sanjay (Host): सर मैं माफी चाहूंगा आपको रोकने के लिए। यहां हम जानना चाहेंगे कि जिस प्रभु जी की बात आप कर रहे हैं क्या उन्हें ही कल्कि अवतार के रूप में माना जा रहा है। (16:16-16:24)

Dr. Anil K. Chawla: अ यस या नो? इसको [हंसी] मैं ऐसे कहूंगा पहले तो मैं आपको प्रभु जी के दर्शन करवा दूं। ये ये ठाकुर जी हैं जिनकी मैं बात कर रहा हूं। इनका जन्म 1900 स्थूल जन्म की बात करूंगा। 1955 में जन्म हुआ था और 2015 में ये शरीर छोड़ के जा चुके हैं। इन्हीं के माध्यम से 22 चरम आए हैं। 93 से शुरू हो के इनको 78 में गुरु जब 22 साल के थे गुरुगद्दी पे बिठा दिया गया था। वो क्यों बिठा दिया गया था वो सब कहानियां वो सब चीजें इस केशवामृत इनकी जीवनी में लिखी हुई हैं। तो क्यों लोगों ने इनको गुरु माना? इन्होंने क्या काम किए पूरे जीवन काल में वो सब इस केशवामृत में दे रखे हैं। (16:27-17:14)
अब इन्हीं के माध्यम से जो चरम शास्त्र आया है जिसकी मैं अभी जननी जठर जरायु की बात करने लगा था। तो वो अलग-अलग शीर्षकों में अलग-अलग एक-एक चैप्टर आता रहा। सो 50 में 50 चैप्टर आ गए। तो यह जो मदम है पहले चरम से शुरू हो के 50 22 सालों में यह तकरीबन 50 लेख आ गए। अब ये लेख इतने गहरे हैं। हमारी रचना कैसे हुई? हम बनते सब एक जगह पे हैं मातृ गर्भ में। बट सब अलग-अलग होके निकलते हैं। हम कह देते हैं कर्मों का फल। बिल्कुल सही बात है। बट वो कर्म कैसे होते हैं? उन पे व्याख्या क्या है? वो सब चरम के माध्यम से हमारे सामने आएगा। (17:14-17:55)
फिर निष्काम कर्म क्या है? सकाम कर्म क्या है? वह भी प्रॉपर व्याख्या। जो भी कर्म अपनी आत्मा के उन्नति के लिए जो भी कर्म सर्व हित में दूसरे जगत के कल्याण के लिए किए जाते हैं, वह आते हैं निष्काम कर्म में। ये निष्कर्मा खोने को नहीं कहा जाता कभी भी किसी को। क्योंकि वो भगवत गीता में हमने श्लोक भी एक सुना हुआ है जो कृष्ण महाराज कह के गए थे कि इन तीनों लोकों में मेरे करने योग्य कोई भी कर्म नहीं है। हम पर मैं हमेशा कर्म तत्पर रहता हूं। यह वो कह के गए थे। और इसी तरह ठाकुर जी को हमने देखा है। उनकी जीवनी में देखा है। उनके साथ जो लीला अंग आए हुए थे उनके माध्यम से सुना है। क्योंकि मैं तो बहुत लेट जुड़ा ठाकुर जी के साथ 2006 में। उनके साथ जब महसूस किया उनसे बातें करी तब पता लगा कि वाकई इन्होंने शुरू से कुछ नहीं किया। कोई गुरु नहीं धारा। कोई इनको ज्ञान कहीं से नहीं किताबें

नहीं पढ़ी। कोई इन्होंने योग तप नहीं किया। तो यह सब ज्ञान को हम एंड में आके क्या कहेंगे? शरण ज्ञान। मतलब जो ऊपर से शरित होता है। (17:56-19:04)

और इनको मैं पूर्ण परम ब्रह्म कह रहा हूं। इस शरीर को हम कल्कि शरीर कह सकते हैं। क्यों? बिकॉज़ केशव धृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे। इस तरह करके एक गीत गोविंद आया था जिसमें 10 विद रूपों का रूप है वर्णन है। ये 1200 बीसी एडी की बात है। श्रीला जयदेव गोस्वामी ने लिखा था गीत गोविंदम ये बहुत फेमस है। इसमें दसों रूपों का वर्णन है। केशव धृत मीन शरीर जय जगदीश हरे। केशव धृत कुर्म शरीर जय जगदीश हरे। केशव धृत बोर शरीर जय जगदीश हरे। और एंड में आकर केशव दृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे तो उस तरह हम कह सकते हैं और मैं कल्कि को जो समझता हूं मैं कल्कि को ज्ञान समझता हूं क्योंकि आज की डेट में हमारे सबके अंदर मलेच्छत्व या अज्ञान भरा हुआ है और वही वजह है जिस वजह से हम दूसरे को कुछ नहीं समझते। हम स्वार्थ पर रहते हैं। जबकि स्वार्थ पर रहेंगे तो यह धर्म के विरुद्ध है। हम आगे नहीं चल सकते। जब तक हम निस्वार्थ पर नहीं आएंगे, जब तक हम सबका मंगल सोच के नहीं चलेंगे, जब तक हम इकट्ठे होकर भाईचारे में काम नहीं करेंगे, किसी के ऊपर पैर रख के हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे कभी भी। और वो सब धर्म के विरुद्ध है। तो वो इस वजह से है बिकॉज़ हमें अध्यात्म का ज्ञान नहीं है। हमारे पास यह ज्ञान नहीं है जो ठाकुर जी देके गए हैं। वो ज्ञान पहले वाले भी हैं और ठाकुर जी ने बकायदा पहले ही चरम में हमें पिता की तरह संबोधन करते हुए हमारे लिए जो लिखे हैं तुम्हारा कल्याणों में पहली ही वाणी यह है रे चरम तुम रत्यधाम आया है। सुनकर खुशी हुई। हम सब चरम हैं क्योंकि उस चरम अल्टीमेट से ही खुदा से ही हम आए हैं। उस उनका अंश है हमारे अंदर। हम उसी के पुत्र हैं सभी। तो वो हमें चरम की तरह ही एड्रेस कर रहे हैं। रे चरम तू मृत्यधा आया है। सुनकर खुशी हुई। सर्वप्रथम तू जगन्नाथ प्रभु को प्रणाम करना। बिकॉज़ ये जगन्नाथ की ही लीला है कलयुग की। उनको प्रणाम करना। उसके बाद पूर्ववर्ती गुरुओं को प्रणाम करना। मतलब जो सब पहले गुरु आए हैं उन सबको प्रणाम करना। (19:05-21:24)

वो सब आज भी वह पद्धतियां आज भी आश्रम में चल रही हैं। जितने यज्ञ होते हैं हर जगह ये सब बताया जाता है। ये कैवल्य मंडल से आई हुई आत्माएं हैं। कैवल्य मंडल का वर्णन भी चरम में है। तभी कहा सृष्टि की रचना कैसे हुई? अव्यक्त की रचना क्या है? सूक्ष्म जगत की रचना क्या है? स्थूल जगत की रचना क्या है? और स्थूल जगत सिर्फ ये पृथ्वी नहीं है। ये पूरा ब्रह्मांड जो दिखता है ये स्थूल जगत है। इसके बियोंड सूक्ष्म जगत है। यत पिंडे तत ब्रह्मांडे जो कुछ ब्रह्मांड में है वो हम पिंड में महसूस करते हैं। स्थूल जगत ये आ गया हमारा। सूक्ष्म जगत हमारा मन इंद्रियां बुद्धि ये आ गया। उसके पीछे कारण जगत हमारी आत्मा है और वह आत्मा भी अंश है उस परम ब्रह्म का जो अंदर बैठा है साक्षी स्वरूप और आत्मा 12 कवरिंग्स लेके आती है जो इसमें दे रखा है मदर्स रूम में उन 12 कवरिंग्स के हिसाब से वो कर्मों के हिसाब से कवरिंग्स मिलती हैं हमें उन कर्मों के हिसाब से हमारी कवरिंग्स मिल गई उनमें से फिर एक कवरिंग है श्रणश्रंकोष उसके साथ वो 64 स्तर में ओकार मात्रा में 64 स्तर निर्माण करके हमारे अंदर विद्यमान है। वो 64 स्तर क्या है? जिसमें हमारी बुद्धि भी आती है। हमारी नेचर भी आती है। हमारी कॉन्शियसनेस भी आती है। कॉन्शियसनेस भी एक तरह की नहीं है। इस तरह का गहरा ज्ञान है इसमें जो आज तक धरती पे नहीं था। हम इसी तरह करके और भी ज्ञान है प्रश्न उत्तर हैं सारे जो उनके पहले डिसाइपल के साथ थे वो अनिवान दीपशिखा नामक क्योंकि ठाकुर जी बोलते नहीं थे कुछ भी बहुत कम बोलते थे सिर्फ एक बार उन्होंने वर्ल्ड को संबोधन किया है सन 2000 की बात है बारीपदा में बारीपदा में विश्व मानव धर्म सम्मेलनी हुई थी उसमें उन्होंने छह सात प्रश्नों के उत्तर दिए थे वो सब प्रश्न उत्तर भी इसमें आए हुए हैं इन्हीं पुस्तकों में जो अब आई हैं। यह सारा ज्ञान उड़िया में था और इन प्रश्न उत्तर में समस्त जिज्ञासा का निवारण होता है हमारी। तो जब हमें यह पता लगता है फिर हमें पद्धतियां भी इनके माध्यम से पता चलती हैं कि आज

की डेट में मन को साध मन को कोई भी नहीं साध सकता। मन है क्या? उसके बारे में भी ज्ञान मिलेगा। यह आत्मा का प्रतिछवी है और आत्मा भी प्रतिबिंबित होती है। आत्मा कहीं आती जाती नहीं है। प्रतिबिंबित होती है। सो पहला जो बनता है वो चित्त बनता है। चित्त में वो आत्मा रिफ्लेक्ट करती है और आत्मा ही सबकी अलग-अलग है। हम तो आत्मा एक ही मानते हैं। उसकी कवरिंग्स की वजह से अलग-अलग है। वो ओमकार मात्रा की कवरिंग है। (21:25-24:16)

जैसे हम कलर व्हील की बात करेंगे। प्राइमरी कलर्स तो तीन ही हैं। प्राइमरी कलर से कलर वीर बन जाता है 256 का। इसी प्रकार कुछ आप समझिए कि आत्मा को जो 12 कवरिंग मिली और आगे एक कवरिंग जो है जो 64 स्तर में 64 लेवल्स में बनाती है हमारे शरीर के कोषों को। सूक्ष्म कोषों की बात कर रहा हूं मैं। क्योंकि यह सूक्ष्म ढांचा हम अव्यक्त मंडल से या कारण जगत से ले आए हैं। और जब हम मातृगर्भ में होते हैं तो हम वो उस कवरिंग्स की वजह से हम अव्यक्त मंडल तक कारण जगत तक जुड़े हुए हैं। जिस तरह की कवरिंग्स मिली है उस तरह की हमारी मैन्युफैक्चरिंग होगी उस मातृगर्भ में। ये इस तरह का गहरा ज्ञान है उसमें। उसी से हमारी नाद गर्दन कोष हमारी बुद्धि का कोष बनेगा। सल बुद्धि का उसी से हमारी नेचर जो सबकी अलग-अलग है वह बनेगा। वो रज गुजरी कोष है। उसके साथ वो किस में है? वो तीनों गुणों की वजह से है। इसीलिए हम देखते हैं भाई-बहन आपस में किसी के भाव नहीं मिलते। क्यों? माता-पिता तो एक थे। हम बट वो उसमें कुछ जो आत्मा आती है अपना प्रारब्ध लेके आती है। फिर उसमें संचित उसके माता-पिता के वंश गुण आते हैं उस वंश के। फिर उसमें ग्रह नक्षत्र जुड़ जाते हैं उस टाइम के वह उसका संचित हो गया। फिर आता है उसका क्रियामान कि जो उसने इस जन्म में कर्म किए और वो जो पिछले कर्म किए होते हैं प्रारब्ध के और संचित की वजह से आप गुरु के पास पहुंचते हो। (24:16-25:54)

Sanjay (Host): बिल्कुल। (25:55)

Dr. Anil K. Chawla: आप उस वजह से ही गुरु के पास पहुंच पाओगे। नहीं तो नहीं अगर पहले उस तरह के कर्म किए हुए हैं तो तभी हमारा झुकाव उस तरफ चले जाएगा। जिन्होंने ऐसे कर्म ही नहीं किए उनको वो जल्दी-जल्दी उधर झुकाव नहीं जाएगा। बट यह नहीं उन्हें करने नहीं चाहिए क्योंकि ये सोल की जर्नी है। वही 64 स्तरों की जर्नी है और वो जर्नी हमारे इन चक्रों के माध्यम से होनी है। इसीलिए भू भुआ स्वाहा जो तीन मंडल तो नीचे हैं। कहां तक हैं? महामंडल यहां आ गया हार्ट में। फिर यह जनोक तपलोक सत्यलोक फिर यह सहस्रार फिर सहस्त्रार से हम जुड़े हुए हैं आब्रह्म स्तंभ तक किस तरह जैसे सूर्य ने सूर्य की किरणों ने इस धरती के एक-एक जीव को धारण किया हुआ है। अगर सूर्य बुझ जाएगा तो कुछ नहीं जिंदा रहेगा यहां पे। इसी तरह उस परम ब्रह्म ने, अव्यक्त ने, सुपरकॉन्शियस ने जिसे हम खुदा कहते हैं। उसने इन सब चीजों को धारण किया हुआ है। हमें भी धारण किया हुआ है। (25:55-27:04)

Sanjay (Host): बहुत सुंदर। (27:04)

Dr. Anil K. Chawla: तो ये सारा ज्ञान आपको इन्हीं के माध्यम से मिलेगा जो पहले नहीं था। ये चरम में है। इस शास्त्र में है। (27:06-27:12)

Sanjay (Host): बहुत सुंदर। बहुत सुंदर। तो सर काफी रोचक और गढ़ विषय पर आप चर्चा कर रहे हैं अ और मुझे लगता है कि आपको जितना सुनूं उतना और सुनने का मन करता है। लेकिनकि समय की थोड़ी मर्यादा है इसलिए हम अंत में दो और प्रश्न लेंगे यहां पे जो कि प्रश्न नहीं बल्कि मैं कहूंगा जिज्ञासा है। सबसे पहले ये कि आज के युग में जब स्पिरिचुअलिटी भी एक कंटेंट इंडस्ट्री बन चुकी है। चाहे वो बुक फॉर्म में हो, वीडियोस फॉर्म में हो, ऑडियो विजुअल फॉर्म में हो या कोई भी कोर्सेज फॉर्म में हो। तब एक सीकर कैसे पहचाने कि कौन सा पाथ ऑथेंटिक है और कौन सा कमर्शियल है। इस पे कुछ कहेंगे सर आप? (27:14-28:02)

Dr. Anil K. Chawla: जी। यह भी बहुत सुंदर प्रश्न है। बिकॉज़ जैसे मैं अपने जीवन के साथ ही रिलेट करूंगा कि ठाकुर जी के पास पहुंचने से पहले मैं जैसे कहा मैं रविशंकर के आश्रम भी था। बहुत क्लोजली एसोसिएटेड रहा। सात साल के करीब। उनके सत्संग होते थे हमारे घर में। मैंने अपनी जगह भी दे रखी थी। वहां उनका दवाखाना भी खोल के वो सब कुछ करता होता था। मतलब मैं बहुत क्लोज चले जाता होता था। और इसी तरह मैं वेदता लाइफ इंस्टट्यूट है पुणे में उनके भी बहुत क्लोज गया ओशो के भी क्लोज गया व्यास में भी आश्रम है निरंकारियों का उनको भी जाके देखा परखा मतलब बहुत जगह पे मैं घूमा हुआ था शास्त्र तो पढ़े ही हुए थे बट जैसे हम क्लोज होते हैं तो हमें वहां पे ऑटोमेटिकली कुछ नेगेटिविटी तो नहीं मैं कहूंगा बट कमर्शियल कंटेंट्स हमें अंदर से ही आवाज आनी शुरू हो जाती कि यह ठीक नहीं है। यह ठीक नहीं है। मतलब वो आवाज आनी भी आप जितना प्रभु की तरफ ध्यान रखेंगे, सुप्रीम की तरफ ध्यान रखोगे तब आएगी वो आवाज। नहीं तो यहां पे मैं सिर्फ प्रभु जी की वाणी दोहराऊंगा कि जो ठगता है वो अविश्वासी होता है। हम और जो ठगा जाता है वो भी अविश्वासी होता है। सो इसलिए उस सुप्रीम पावर पर विश्वास रखो। जब हम मन में प्यास रखेंगे आरती बोला जाता है तीव्र भूख तीव्र प्यास वो रखेंगे कि आपको हमने पाना है हम उन्हीं से प्रार्थना करेंगे उस अज्ञात शक्ति से जो किसी ने नहीं देखी बट हमारा फॉर्च्यून है कि वो अभी मानव शरीर में थे जिसको हमने कहा केशवदित कल्कि शरीर जिनके साथ आज भी उनके क्लोज एसोसिएट जो रहे हैं उन्होंने उनको महसूस किया कुछ हद तक मैं भी 10 साल उनको महसूस कर पाया तो वो वो ऐसे लोग अभी जिंदा हैं। (28:06-30:04)

उन लोगों से मिलके उनकी अनुभूतियां ले सकते हैं। इस बुक में जो मैंने कहा 40 से ज्यादा भक्तों की अनुभूतियां हैं। तो वो अनुभूतियां वो लोग आज भी हैं जो प्रत्यक्ष लीलांगी लीला उनकी दर्शी हैं। बट कहने का मकसद ये तो आज की बात है। आगे के लिए क्या होगा? जब तक हम अगर तीव्र प्यास रखेंगे तो जब वक्त आएगा वह बाकी छटते जाएंगे और गुरु अपने आप आ जाएगा शिष्य को ढूंढना नहीं पड़ता गुरु को जो एक जगह प्रभु जी ने भी यह लिखा हुआ है उनके एक जगह पे प्रश्न उत्तर थे जो यतिशदा के साथ प्रश्न उत्तर है जो मैंने आपको बताई उसमें वो कहता है कि गुरु नगाड़े बजाते हैं मतलब वो अपना काम कर रहे हैं हम शिष्य वह सुन के वहां जाता है जब सुन के जाता है फिर वो वहां अट्रैक्ट होता है कि वहां पे उसको अलग नजर आता है महसूस अलग होता है क्योंकि यह सेटल की बातें हैं जैसे हम किसी को मिलते हैं तो क्या होता है हम कहते हैं जी इसका ओरा बड़ा पॉजिटिव है इसकी तरफ हम अट्रैक्ट हो गए इसका ओरा नेगेटिव लगा हम इससे हम नजदीक नहीं जाना चाहते वो क्या है वो सेटल की बात है इसी तरह वहां पर भी जहां जो अननेसेसरी होगा वो छटता जाएगा जो नेसेसरी होगा वहां पे आप ऑटोमेटिकली पहुंच पहुंच जाओगे। जैसे मैं पहुंचा मैं भी तो इतने साल पहले 97 से लेके 2006 तक 9 साल इधर-उधर ही जाता रहा ना। तो फिर प्रभु कृपा जब हुई और प्रारब्ध में होगा और हम तीव्र इच्छा रखेंगे, विश्वास रखेंगे, उनको प्रे करेंगे, सुबह उठ के ध्यान करेंगे, मेडिटेशन में बैठेंगे, उनका ध्यान करेंगे कि हमें रास्ता दिखाओ तो वो हमें रास्ता जरूर दिखाएंगे। (30:04-31:47)

Sanjay (Host): वेरी थॉटफुल ऑफ यू सर। और बहुत ही सुंदर व्याख्यान सर आपने दिया आज और मुझे लगता है कि आपके हर शब्द अपने आप में प्रेरणादाई है और अंत में जैसा हम अपने सभी अतिथियों से आग्रह करते हैं एक पीस मैसेज के लिए तो मैं आपसे भी यह आग्रह करूंगा कि काइंडली फॉरवर्ड अ मैसेज ऑफ़ पीस फॉर सोसाइटी सो दैट वी कुड क्रिएट अ बेटर वर्ल्ड फॉर अ बेटर टुमारो। जी ओवर टू यू। (31:48-32:16)

Dr. Anil K. Chawla: ऐसे है कि सबसे पहली बात हम अकेले तो जी नहीं सकते। हम अकेले ना तो आगे बढ़ सकते हैं ना संसार में कुछ कर सकते हैं और ना ही हम शांति से रह सकते हैं। तो उसके लिए हमें सामंजस्य में रहने के लिए क्या करना पड़ेगा? जब तक हम दूसरे के बारे में संवेदनशील नहीं होंगे। जब तक

हम दूसरे के साथ भाईचारे का बर्ताव नहीं करेंगे। जब तक हम दूसरे को टोलरेट नहीं करेंगे, हमारे में टॉलरेंस नहीं है। हम दूसरे को बर्दाश्त नहीं करते। जब तक हम उसके साथ प्रेम भाव नहीं रखेंगे। और ये सब क्या है? ये धर्म का आचरण करने से आते हैं। जब तक हम धर्म पूर्वक आचरण नहीं करेंगे उसके साथ। बाकी तो अधर्म तो हो गया ना जब हम अपने स्वार्थ पे रहेंगे तो जब हम अपने बारे में ही सोचेंगे। किसी दूसरे का नहीं सोचेंगे। वो स्वार्थ पे हो गए तो उस तरह करके हम कितनी आगे बढ़ पाएंगे हमें कितना सहयोग मिलेगा दूसरों का नहीं मिलेगा अपने भी बेगाने हो जाएंगे और जब हम इस तरह करके रहते हैं तो बेगाने भी अपने हो जाएंगे तो सारा संसार क्यों नहीं एक हो जाएगा वासुदेव कुटुंबकम क्यों नहीं साकार हो जाएगा हमारे हमारे परिवार में क्यों नहीं सुख शांति आएगी परिवार में आएगी फिर हमारे सोसाइटी में आएगी फिर वर्ल्ड में आएगी तो ये शुरुआत तो हमें नहीं करनी पड़ेगी आपस में भाईचारे में और उसके लिए हमें ही दूसरों के बारे में संवेदनशील होना पड़ेगा सोचना पड़ेगा और दूसरे सिर्फ इंसानों की बात नहीं कर रहा हूं नेचर भी उसी में है। प्रकृति भी उसी में है। हम प्रकृति का ही हिस्सा हैं। हम प्रकृति को तो नष्ट किए जाएं। तो उसका नतीजा हमारे सामने है। हम भोग रहे हैं। कोरोना काल से शुरू करके आजकल भीष्म आग लगी हुई है। जगह-जगह पे समुंदर पोल्यूट कितने हो चुके हैं। वन्य जान जो जानवर हैं जीवजंतु जंगलों के वो शहरों में घूम रहे हैं। आकाश तक कहां तक पोलशन हमने फैला दी है। और फिर वर्ल्ड में क्या चल रहा है? वो आप देख रहे हैं। आपस में किस तरह युद्ध चल रहे हैं? किस चीज के हैं? इस तरह हम कहां आगे बढ़ेंगे? पीस का मतलब तो यही है कि हम अपने आपस में पहले भाईचारा बनाएं फिर समाज में फिर संसार में तभी हम इसको आगे ले जा पाएंगे इस संसार को। और ये सारा दायित्व किसका है? आज की युवा पीढ़ी का दायित्व है। अगर वो नहीं इस चीज को समझेंगे तो हम आगे कैसे बढ़ेंगे? और उनके लिए यह एक अह चरम की एक यह पुस्तक उन्हीं युवा पीढ़ी के लिए लिखी गई है। (32:17-34:58)

Sanjay (Host): हम्। (34:59)

Dr. Anil K. Chawla: इसमें पहले 90 पेजों में मेरे अपने एक्सपीरियंसेस हैं। उसके बाद में पूरे चरम को निचोड़ के दे दिया है 90 पेजेस में। फिर चरम में किस-किस हेडिंग्स में आर्टिकल आते थे। कुछ-कुछ संस्क्रिप्शन में दे दिए हैं। तो, यह पुस्तक युवा पीढ़ी के लिए लिखी गई है। (34:59-35:14)

Sanjay (Host): सर, वी आर इमसली ग्रेटफुल टू यू फॉर योर एनलाइटनिंग डिस्कोर्स। और मुझे पूरी उम्मीद है कि आपके हर शब्द हमारे व्यूअर्स के लिए एक ट्रांसफॉर्मेशनल टूल का काम करेगी। एक समग्र और संतुलित जीवन जीने के लिए। सो वंस अगेन वी आर इमेंसली ग्रेटful टू यू फॉर योर स्कॉलरली एंड डिवाइन प्रेजेंस विद अस टुडे और आध्यात्मिक जगत में आपके उत्कृष्ट और सराहनीय कार्यों के लिए लाइफ एक्सप्रेस की जोड़ी ने आपके लिए एक अवार्ड की घोषणा की है और वो अवार्ड है लाइफ एक्सप्रेस आइकॉन ऑफ इंडिया अवार्ड और आपके इस उपलब्धि पर मैं आपको अपने इंटेलेक्चुअल व्यूअर्स की ओर से ढेरों बधाई देता हूं। हार्टेस्ट कांग्रेचुलेशंस गॉड विलिंग वी शैल मीट अगेन इन सम अदर एकेडमिक फोरम। थैंक यू फॉर कनेक्टिंग विद अस टुडे। थैंक यू सो मच। (35:15-36:18)

Dr. Anil K. Chawla: थैंक यू। (36:19)

Sanjay (Host): सर बिफोर वी क्लोज एक छोटी सी बात मैं कहना चाहूंगा कि ये जो सारी मैंने आपको पुस्तकें दिखाई हैं। जैसे मैंने कहा उड़िया भाषा में था चरम का ज्ञान। जी तो यह आज हिंदी और अंग्रेजी में 15 पुस्तकें नेट पे अवेलेबल हैं। आप घर बैठे इनको मंगवा सकते हो। (36:21-36:38)

Dr. Anil K. Chawla: बहुत अच्छा। (36:38)

Sanjay (Host): एलेक्सपी आइकॉन ऑफ इंडिया अवार्ड इज प्राउडली प्रेजेंटेड टू श्री अनिल के चावला फॉर हिस एक्स्पेंरी कंट्रीब्यूशन टू द फील्ड ऑफ स्पिरिचुअलिटी ऑन 30th जनवरी 2026। आज के सत्र की समाप्ति मैं फिर एक आह्वान के साथ करूंगा। खासकर श्री अनिल जी की बातचीत से निकले कुछ मुख्य

अंश को लेकर। सबसे पहले उन्होंने बताया कि 2006 में अपने व्यवसाय से उन्होंने स्वेच्छा से अपने कदम पीछे कर लिए क्योंकि उनका मन काम से उखड़ने लगा था और वे कुछ नया जानना चाहते थे। उन्होंने बताया कि भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक वैराग्य दोनों एक साथ संभव है लेकिन केवल भौतिक सफलता आंतरिक संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है। आध्यात्मिक ज्ञान के बिना लोग अशांत रहते हैं। अनिल जी ने ठाकुर केशव चंद्र जी द्वारा रचित चरम नामक आध्यात्मिक ग्रंथ के महत्व पर जोर दिया जिसे वे भगवत गीता से भी आगे मानते हैं। क्योंकि यह आज के विज्ञान युग के युवाओं के सवालों के जवाब देता है। यह ग्रंथ सृष्टि की रचना, मानव शरीर की रचना और कर्मों की व्याख्या जैसे गहरे ज्ञान प्रदान करता है। ठाकुर जी को कल्कि अवतार के रूप में भी देखा जाता है और उनके ज्ञान को शरण ज्ञान कहा जाता है। उन्होंने बताया कि आज के युग में जहां आध्यात्मिकता भी एक उद्योग बन गई है। एक साधक को प्रमाणिक मार्ग की पहचान करने के लिए अपनी आंतरिक आवाज और सर्वोच्च शक्ति पर विश्वास रखना चाहिए। उन्होंने वैदिक ज्योतिष के बारे में भी बात की और बताया कि ग्रह नक्षत्र जीवों के पाप कर्मों को नियंत्रित करते हैं। लेकिन कर्मों द्वारा भाग्य को बदला जा सकता है। यह तभी संभव है जब गुरु की कृपा हो और व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग पर चलना चाहे। अंत में उन्होंने शांति और प्रगति के लिए एक संदेश दिया जिसमें उन्होंने भाईचारे संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति सम्मान पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें दूसरों के बारे में सोचना चाहिए और धर्म पूर्वक आचरण करना चाहिए ताकि समाज और संसार में शांति आ सके। वि दोस डेलीबेशंस ऑफ श्री अनिल कुमार चावला जी वी कंक्लूड दिस एपिसोड हियर और मिलते हैं अगले एपिसोड में समाज के एक और रोल मॉडल के साथ। टिल देन एंजॉय योर टाइम मीनिंगफुली और हां अपना और अपनों का भी ख्याल रखें। जय हिंद। (36:41-39:30)